एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य

(जुलाई 2020 और जनवरी 2021 सत्रों के लिए)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम :

मॉड्यूल '4' : मध्यकालीन कविता

एम.एच.डी – 21 : मीरा का विशेष अध्ययन

एम.एच.डी – 22 : कबीर का विशेष अध्ययन

एम.एच.डी – 23 : मध्यकालीन कविता–1

एम.एच.डी – 24 : मध्यकालीन कविता–2

(पृष्ठ 1 से 5 तक)

एम.एच.डी.21 : मीरा का विशेष अध्ययन

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–21
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–21/टी.एम.ए/2020–2021
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10x3=30**

(क) अब मीरां मान लीज्यो म्हारी
हांजी थांनै सइयां बरजै सारी।
राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी।
कुँवर पाटवी सो भी बरजै, और सहेल्यां सारी।।
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी।
गले गूजरी कर में कंकण, नेवर पहिरे भारी।।
साधुन के संग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नींच घर जावो, कुलकूँ लगावो गारी।।
बड़ा घरांकी छोरी कहावो, नाँचो दे दे तारी।
बर पायो हिंदवाणो सूरज, अब दिल में कहा धारी।।
तार्‌यो पीहर सासरो तार्‌यो, माय मोसाली तारी।
मीरां ने सतगुरुजी मिलिया, चरण कमल बलिहारी।।

(ख) गोबिन्द का गुण गास्यां।
राणोजी रूसैला तो गांम राखैला, हरि रूठयां कुमलास्यां।।
राम नाम की जहाज चलास्यां, भवसागर तिर जास्यां।।
चरणामृत को नेम हमारो, नित उठि दरसण पास्यां।।
विषरा प्याला राणोजी भेज्या, इमरत करि गटकास्या।।
यो संसार विनास जानिकै, ताको संग छिटकास्यां।।
लोक लाज कुल काणिहु तंजिकै, निरभै निसांण घुरास्यां।।
मीरा के प्रभु हरि अविनाशी, चरणकमल बलि जास्यां।।

(ग) राणाँजी म्हारो काँईं करसी, मैं तो सेया छै श्री भगवान
पंगा बजावै मीरां घूघरा, हाथां बजावें झाँझ।
साँवरियो म्हांने दरसण देसी, परभाताँ और साँझ।।
नाग–पिटारी राणाँजी भेजी, हो गयो सालगराम।
विष रो प्यालो राणाँजी भेज्यो, चरणामृत कियो पान।।
साधाँ री संगत मीरांजी छोड़ो, साधां रो संत सुभाव।
साधाँ री संगत राणाँजी नं छोड़ाँ, गहरो लाग्यो छैं घाव।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : **15x3=45**

(i) मीरा के समय के सामाजिक ढाँचे को विश्लेषित कीजिए।
(ii) मीरा की प्रेमभावना के विविध आयामों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
(iii) मीरा की काव्यभाषा के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5x5=25**

(i) गुजरात के भक्त कवि और मीरा
(ii) मीरा के काव्य में गीतिपरकता
(iii) मीराकालीन समाज में स्त्री की स्थिति
(iv) मीरा के आराध्य
(v) अक्क महादेवी

एम.एच.डी.-22 : कबीर का विशेष अध्ययन
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–22
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–22/टी.एम.ए/2020–2021
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 3 = 30**

(क) ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणीं ऊँच न होइ।
सेवन कलस सुरे भर्या, साधू निंद्या सोइ।।

(ख) कबीर इस संसार का, झूठा माया मोह।
जिहि घरि जिता बँधावणाँ, तिहिं घरि तिता अँदोह।।

(ग) अब का डरौं डर डरहि समाँनाँ,
जब थैं मोर तोर पहिचाँनाँ
जब लग मोर तोर करि लीन्हां, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा।।
अगम निगम एक करि जाँनाँ, ते मनवाँ मन माँहि समाना।।
जब लग ऊँच नीच कर जानां, ते पसुवा भूले भ्रँम नाँनाँ।
कही कबीर मैं मेरी खोई, तबहि रॉम अवर नहीं कोई।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) कबीर की भाषा की विशिष्टताएँ बताइए।

(ii) कबीर की साधना पद्धति के मुख्य अवयवों को विश्लेषित कीजिए ।

(iii) कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 5 = 25**

(i) मध्यकालीन धार्मिक रूढ़िवाद और कबीर
(ii) उलटबाँसी
(iii) कबीर के काव्य में अलंकार
(iv) कबीरयुगीन समाज
(v) कबीर पर गोरखनाथ का प्रभाव

एम.एच.डी.-23 : मध्यकालीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–23
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–23/टी.एम.ए/2020–2021
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 4 = 40**

(क) नैन सरूप सेत महँ कारे। खिन खिन वरन होंहि रतनारे।।
अम्ब फार जनु मोतिंह भरे। ते लइ भौंह कै तर धरै।।
सहजहि डोलहि जानु मधु पिया। कै निसि पवन झकोरै दिया।।
अलत समुँद मानिक भर रहे। राइ थाक कर गाँठ न गहे।।
नैन समुँद अति अवगाहा। बूड़हिं राइ न पावहिं थाहा।
भीतर नैन चाँद बस आये, दीखइ दिन आह।
सरग जायि चढ़ वैसे, राजा पूछहु काह।।

(ख) ऊँचे मंदिर शाल रसोई, एक धरी पुनि रहनि न होई।।
यह तन ऐसा जैसे घास की टाटी, जल गई घास, रलि गई माटी।।
भाई बंधु कुटुम्ब सहेला, ओइ भी लागै काढु सबेरा।।
घर की नारि उरहि तन लागी, वह तो भूत–भूत करि भागी।।
कह रैदास जबै जग लूट्यौ, हम तौ एक राम कहि छूट्यौ।।

(ग) बिन गोपाल बैरिन भइं कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत वृथा कमल फूलै, अलि गुंजै।
पवन पानि घनसार संजोवनि दधिसुत किरन भानु भईं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सो बिरह कदन करि मारत लुंजै।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

(घ) लोक की लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रजचन्द सलोनो।
खंजन मीन सरोजन की छवि गंजन नैन लला दिनहोनो।।
रसखानि निहारि सकें जु सम्हारि कै को तिय है वह रूप सुठोनो।
भौंह कमान सों (जोहन) कों सब बेधत प्राननि नन्द को छौनो।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का उत्तर लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) 'चंदायन' के प्रमुख पात्रों की विशेषताएँ बताइए।
(ii) रसखान की काव्यभाषा का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
(iii) रविदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 3 = 15**

(i) आधुनिक काल में कृष्ण काव्य
(ii) सूरदास के काव्य में लोकजीवन
(iii) मध्ययुगीनता की अवधारणा

एम.एच.डी.-24 : मध्यकालीन कविता–2
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–24
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–24/टी.एम.ए/2020–2021
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 4 = 40**

(क) केशव ये मिथिलाधिप हैं जग में जिन कीरति–बेलि बई है।
दान–कृपान बिधानन सों सिगरी बसुधा जिन हाथ लई है।
अंग छ सातक आठक सों भव तीनहु लोक में सिद्धि भई है।
वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमई है।

(ख) जेठ मास की दुपहरी, चली बाल पिय–भौन।
आगि लपट तीखन लुवैं, भए मलय के पौन।।

(ग) पीत पटी लौं कटी लपिटी रहै, छैल छरी लौं खरी पकरी है।
कान्ह के कुंठ की कंठी भई, बनमाल ह्वै बाल हिये पसरी है।।
देव जू कुंडल ह्वै लगी कानन, बांसुरी लौं अधरान धरी है।
मूड़ चढ़ी सिर मौर ह्वै री, गहनो सब ग्वालि गुपाल करी है।।

(घ) थोथे बादर क्वार के, ज्यौं रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करैं पाछिली बात।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) मतिराम के काव्य के भाषा–सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
(ii) रीतिकाव्य परंपरा का परिचय दीजिए।
(iii) रहीम की प्रमुख रचनाओं का परिचय देते हुए उनकी विशेषताएँ बताइए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 3 = 15**

(i) रहीम की भाषा
(ii) परवर्ती कवियों पर 'देव' का प्रभाव
(iii) रीतिकाल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य